Date - 14/08/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. -I (Hons.)

Topic - Pramanyavada : Nyaya Philosophy

Scanned with CamScanner

न्याय दर्शन

न्याय दर्शन परतः प्रामाण्यवाद और परतः अप्रामाण्यवाद में विश्वास करते हैं। इसके अनुसार ज्ञान अपनी उत्पत्ति के समय प्रामाण्य और अप्रामाण्य से रहित होता है। ज्ञान की उत्पादक सामग्रियाँ केवल ज्ञान को उत्पन्न करती हैं, उसके प्रामाण्य और अप्रामाण्य को नहीं। ज्ञान का प्रामाण्य और अप्रामाण्य ज्ञान की उत्पादक सामग्री से भिन्न कुछ अन्य तत्वों से उत्पन्न होता है। ये गुण ज्ञान में बाहर से आते हैं।

न्याय दर्शन के अनुसार इन्द्रियों का अर्थ के साथ सन्निकर्ष होने पर सर्वप्रथम व्यवसायात्मक ज्ञान उत्पन्न होता है जैसे - 'यह घट है'। तत्पश्चात् अनुव्यवसायात्मक ज्ञान अर्थात्, "मैं इस घट को जानता हूँ" उत्पन्न होता है। परन्तु घट सम्बन्धी हमारा ज्ञान तभी प्रमाणित माना जायेगा जब उस घट विशेष में घट को जानता हूँ" उत्पन्न होता है। परन्तु घट सम्बन्धी हमारा ज्ञान तभी प्रमाणित माना जायेगा जब उस घट विशेष में घट सम्बन्धी लौकिक गुण पाए जाएँ अर्थात् उसमें पानी सुरक्षित रहे आदि। इस प्रकार घट ज्ञान परीक्षण में सफल प्रवृत्ति सामर्थ्य रहने पर वह वस्तु घट है अन्यथा घट नहीं नहीं है। स्पष्ट है कि सफल प्रवृत्ति सामर्थ्य से ज्ञान में प्रामाण्य का अनुमान और असामर्थ्य से अप्रामाण्य का अनुमान किया जाता है, अर्थात प्रामाण्य और अप्रमाण्य दोनों परतः होते हैं।

Scanned with CamScanner

आलोचना

(1) मीमांसक नैयायिकों के परतः प्रामाण्यवाद की आलोचना करते हुए कहते हैं कि परतः प्रामाण्यवाद को मानने पर अनवस्था दोष (Infinite Regress) की उत्पत्ति होती है। यदि ज्ञान का प्रामाण्य अन्य तथ्यों पर निर्भर करता है तो उस अन्य तथ्य की प्रमाणिकता भी अन्य तथ्यों पर निर्भर करेगी। इस तरह अनवस्था दोष की उत्पत्ति हो जाएगी।

(2) परतः प्रामाण्य वाद को स्वीकार करने पर व्यवहारिक जीवन कठिन हो जाएगा। प्रत्येक ज्ञान के निश्चय करने के लिए हम प्रवृत्ति सामग्री की प्रतीक्षा करें या फिर हमारा दैनिक जीवन कठिनाईयों से ग्रसित हो जाएगा।

Scanned with CamScanner